कैकेयी का हठ

15

(पौराणिक प्रसंग)

राजा दशरथ की तीन रानियाँ थीं। कैकेयी उनमें सबसे छोटी थीं। उनके दो पुत्र थे– भरत और शत्रुघ्न। बात उस समय की है जब भरत और शत्रुघ्न अपने नाना जी के यहाँ थे। कैकेयी ने अपनी दासी मंथरा के बहकावे में आकर महाराज दशरथ से रानी कौशल्या के ज्येष्ठ श्री रामचंद्र के लिए चौदह वर्ष का *वनवास* और अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी की *हठ* की। राजा ने अतीत में रानी को दो वर देने की *प्रतिज्ञा* की थी, इसलिए उन्हें रानी की इस हठ को स्वीकार करना पड़ा।

श्रीराम ने जब यह सुना तो वे तुरंत वन जाने को तैयार हो गए। उनके साथ रानी सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण भी वन जाने के लिए निकल पड़े। साथ में श्रीराम जी की पत्नी सीता जी भी थीं।

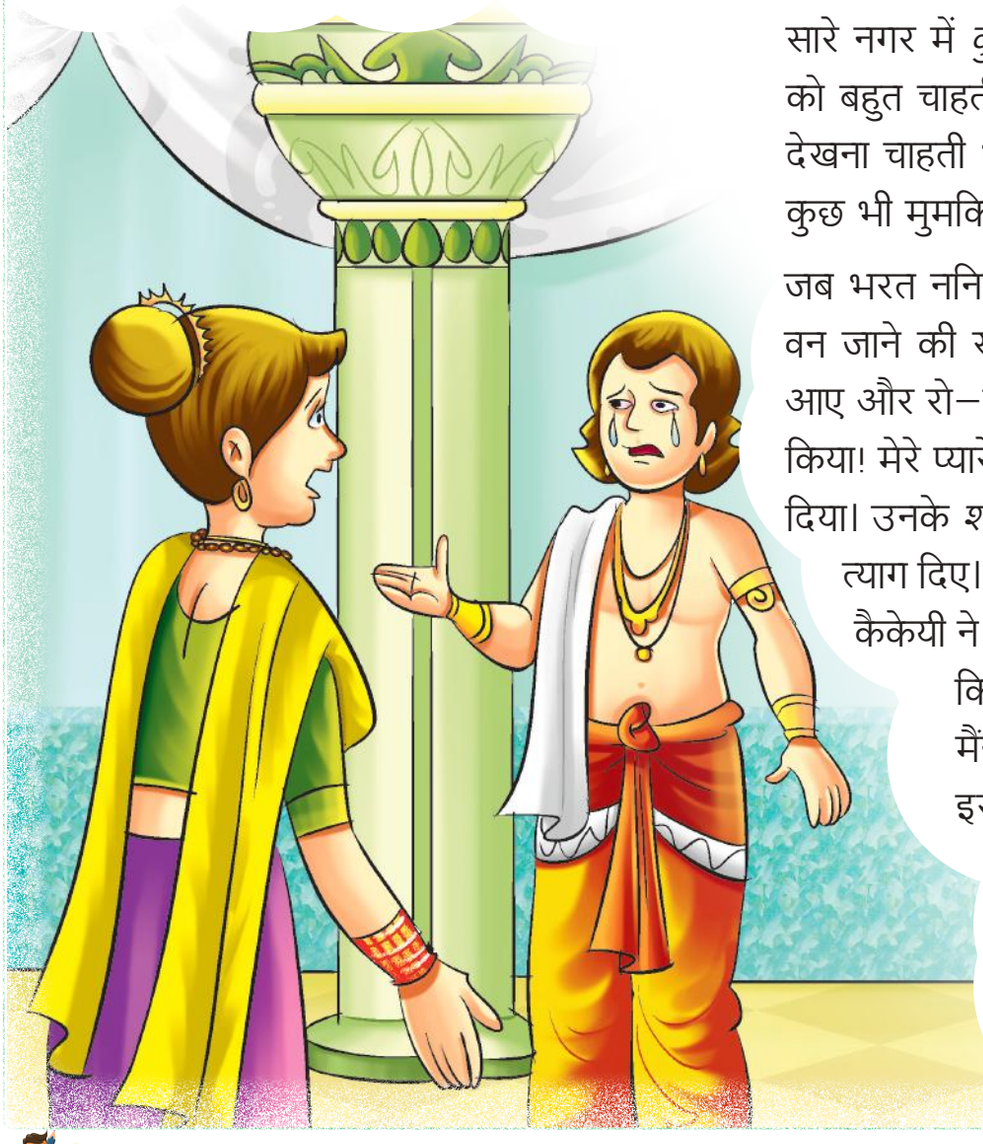

सारे नगर में *कुहराम* मच गया। सारी प्रजा राम को बहुत चाहती थी और उन्हें राजा के रूप में देखना चाहती थी किंतु कैकेयी की हठ के आगे कुछ भी मुमकिन ना हो सका।

जब भरत ननिहाल से लौटे तो उन्हें श्री राम के वन जाने की सूचना मिली। वे माँ के पास दौड़े आए और रो–रोकर कहने लगे– "ये तुमने क्या किया! मेरे प्यारे भाई राम–लक्ष्मण को वन भेज दिया। उनके *शोक* में डूबकर पिताजी ने भी प्राण त्याग दिए। तुमने बड़ा भारी *पाप* किया है...।"

कैकेयी ने भरत को खूब समझाने का प्रयास किया– "पुत्र यह क्या कह रहे हो? मैंने तो तुम्हें राजा बनाना चाहा, इसीलिए तो यह सब किया और तुम मुझे ही दोष दे रहे हो...!"

यह सुनकर भरत के दुःख की सीमा न रही। वे विलाप करते हुए बोले– "सचमुच

लोभ मनुष्य को अंधा बना देता है। राज्य के लोभ में आपने धर्म और अधर्म का विचार भी छोड़ दिया। यह भी न सोचा कि राम जैसे सच्चे, भले और आपका इतना आदर करने वाले पुत्र को वन भेजना कितना बड़ा अन्याय है।

जो भी हो, मैं इस भूल को सुधारूँगा। मैं वन जाऊँगा और राम, लक्ष्मण और सीता जी को मनाकर वापस ले आऊँगा।"

कैकेयी यह सुनकर हक्की-बक्की रह गई। अब उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ। सचमुच दुष्ट दासी के बहकावे में आकर उन्होंने राम के साथ घोर अन्याय कर दिया था। उनके इस कार्य से सभी को दुःख व पीड़ा हुई। कैकेयी की निंदा हर मुख पर थी। भरत ने भी अपनी माँ से मुँह फेर लिया था।

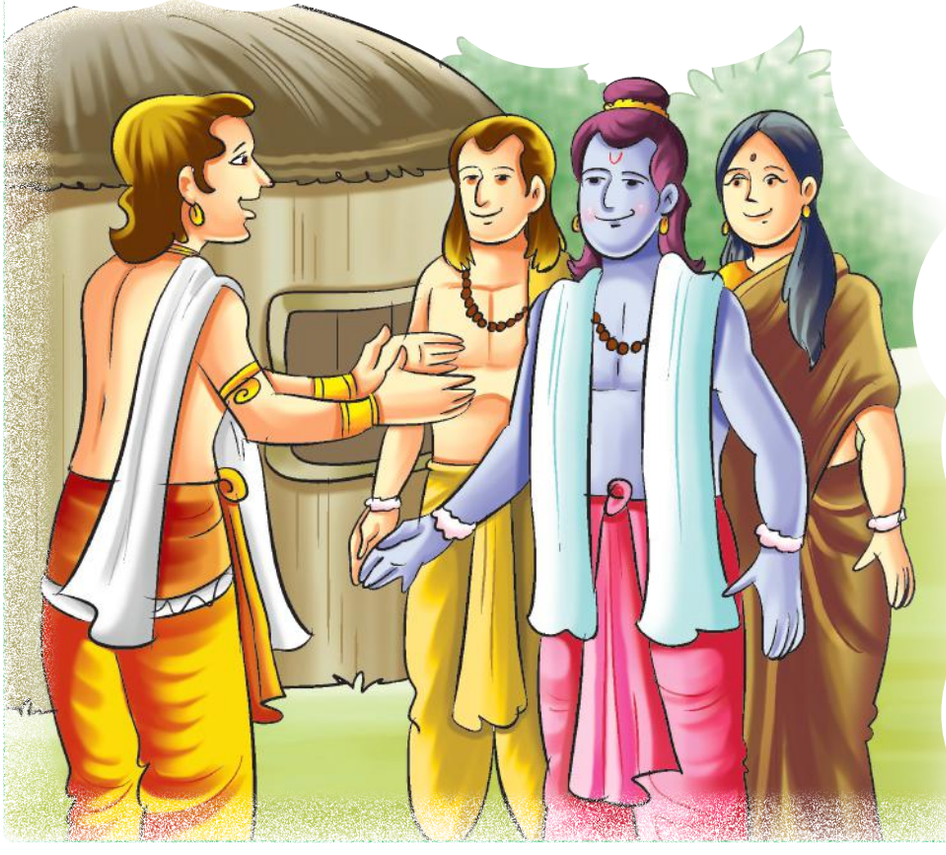

सच है कि बुरा काम करने के बाद मनुष्य को सारी उम्र पछताना पड़ता है।

भरत वन गए। उन्होंने राम को वापस लाने की बहुत चेष्टा की किंतु राम ने उन्हें समझा-बुझाकर वापस भेज दिया। भरत, राम की चरण-पादुका लेकर अयोध्या वापस लौट आए और राम के चौदह वर्ष के वनवास से वापस लौटने की प्रतीक्षा करने लगे।

शब्द-अर्थ

वनवास — वन में रहना *(exile)*,
प्रतिज्ञा — शपथ *(promise)*,
शोक — दुःख *(sorrow)*,
हठ — जिद *(insistence)*,
कुहराम — हाहाकार, चीख-पुकार *(shriek)*,
पाप — बहुत बुरा कार्य *(sin)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

शत्रुघ्न	कौशल्या	राजगद्दी	प्रतिज्ञा	तैयार	ननिहाल
अधर्म	अन्याय	हक्की-बक्की	चेष्टा	अयोध्या	प्रतीक्षा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) प्रस्तुत पाठ में किस पौराणिक कथा के विषय में बताया गया है?

(ख) रानी कैकेयी ने राम के लिए क्या माँगा?

(ग) रानी कैकेयी को अपनी भूल का एहसास कब हुआ?

(घ) राम कितने वर्ष के उपरांत अयोध्या लौटे?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) राजा दशरथ की रानियों में कैकेयी थीं–

☐ सबसे बड़ी ☐ सबसे छोटी ☐ बीच की

(ख) रानी कैकेयी ने राम के लिए माँगा–

☐ वनवास ☐ राज्य ☐ राजगद्दी

(ग) भरत माँ की इच्छा जानकर–

☐ प्रसन्न हुए ☐ दुःखी हुए ☐ बहुत प्रसन्न हुए

(घ) भरत के लौटने का आग्रह सुनकर राम–

☐ वापस लौट आए ☐ नहीं लौटे ☐ वहीं रहे

2. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) भरत को राज्य का लोभ था। ☐

(ख) कैकेयी की दासी ने उनके कान भरे। ☐

(ग) राम अकेले वन गए। ☐

(घ) प्रजा राम को बहुत प्यार करती थी। ☐

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) राजा को रानी कैकेयी की बात क्यों माननी पड़ी?

(ख) राम के साथ और कौन-कौन वन गए?

(ग) मनुष्य को कौन-सा भाव अंधा बना देता है?

(घ) कैकेयी के हठ का क्या परिणाम हुआ?

भाषा-ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए–

(क) निंदा – बुराई, आलोचना।

(ख) दासी – सेविका, नौकरानी।

(ग) अन्याय – बेइंसाफी, पक्षपात।

(घ) एहसास – अनुभव, महसूस।

2. निम्नलिखित में से विलोम शब्दों के जोड़े मिलाकर अलग-अलग कीजिए–

धर्म,	नैतिक,	लोभी,
जिद्दी,	अनैतिक,	संतोषी,
अधर्म,	घमंडी,	राजा,
नम्र,	आज्ञाकारी,	रंक
धर्म-अधर्म	.....	.....
.....	.....	.....

क्रियात्मक गतिविधि

- श्रीराम व सीता जी के जीवन से संबंधित कोई अन्य घटना सुनाइए।
- दीपावली का रामचंद्रजी से क्या संबंध है? बताइए।
- फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता में राम, सीता, लक्ष्मण या दशरथ जी की भूमिका के अनुकूल वेशभूषा धारण करके मंच पर उनके कुछ संवाद कहिए।